मैं कवि हूं जग के मजलूमों का

मैं कवि नहीं शौकीनों का,
मैं कवि हूं जग के मजलूमों का।
जबतक धरती पर है कोई
सितमजदा,
मैं शोषितों के ही पक्ष में
लिखूंगा।

मुझे भले न दो कोई सम्मान,
रखो अपना प्रशस्ति पत्र।
पर जो सच है वही मैं बोलूंगा,
हर जुल्म का पोल मैं खोलूंगा।

यहां हर इंसान अपना ही है,
यहां हर का दुख अपना ही है।
मुझे नहीं चाहिए फूलों का हार,
मुझे चाहिए जुल्मों का अंत।

न शौक मुझे है तालियों का,
है शौक मुझे सच लिखने का।
है शौक रहूं सितमगर के
विरुद्ध,
है शौक दुनिया
को एक बनाने
का।

मैं कवि नहीं ऐयाशों का,
न कवि हूँ मैं बुजदिलों का।
मैं कवि नहीं शौकीनों का,
मैं कवि हूँ जग के मजलूमों का।

अमरेन्द्र

पचरुखिया,फतुहा,पटना,बिहार

साहित्य रत्न जुलाई2023